रिश्ते, रिश्तों के नाम और भाषा की समृद्धता

डॉ. डी बालसुब्रमण्यन

मैं उस व्यक्ति को क्या कहकर पुकारूं जिसने मेरी पत्नी की बहन से शादी की है? कई भारतीय भाषाओं में हम उसे शाद्दका या साढ़ू भाई कहते हैं। भारतीय-अंग्रेज़ी में उसे 'को-ब्रदर' या 'को-ब्रदर-इन-लॉ' भी कहते हैं। वैसे मुझे लगता है कि यह सबसे विचित्र शब्द गढ़ा गया है। इंग्लैण्ड में इस रिश्ते के लिए कोई शब्द नहीं है। आप उसे उसके नाम से ही पुकारते हैं। फिर देखा जाए तो शाद्दका या साढ़ू से यह पता नहीं चलता कि वह आपकी पत्नी की छोटी बहन का पति है या बड़ी बहन का।

मगर भाइयों और उनकी पत्नियों की बात करें, तो स्थिति बहुत अलग है। मेरी पत्नी मेरे भाई की पत्नी को तमिल में ओर्पादी बुलाती है (या तेलुगु में टोटीकोलादी)। यहां भी चाहे भाई बड़ा हो या छोटा दोनों के लिए एक ही शब्द का उपयोग होता है। मगर हिन्दी में मेरी पत्नी मेरे बड़े भाई को जेठ (और उसकी पत्नी को जेठानी) और छोटे भाई को देवर (उसकी पत्नी को देवरानी) कहेगी। शुक्र है कि भारतीय अंग्रेज़ी में हमने 'को-सिस्टर-इन-लॉ' शब्द नहीं गढ़ा है।

रिश्तों को दर्शाने वाले ऐसे विशिष्ट शब्द कुछ ही भाषाओं या समुदायों में पाए जाते हैं, सबमें नहीं। इंग्लैण्ड और यूएस में ऐसे रिश्तों के लिए कोई शब्द नहीं है, एकदम बारीक भेद करने वाले शब्दों की तो बात ही जाने दें। वे सिर्फ अंकल और ऑन्ट, सिबलिंग्स (भाई-बहन), निबलिंग्स (निबलिंग्स शब्द का उपयोग भतीजे-भतीजियों, भानजे-भानजियों के लिए होता है) और ग्रांडपेरेंट्स (दादा-दादी, नाना-नानी) की बातें करते हैं।

ऐसा क्यों है कि कुछ समुदायों, संस्कृतियों और उप-संस्कृतियों में रिश्तों के लिए इतने विशिष्ट शब्दों का उपयोग होता है जबकि अन्य समुदाय इस मामले में बहुत रूखे होते हैं? सवाल तो यह भी है कि ये शब्द कितने दूर के सम्बंधों को व्यक्त करते हैं। संज्ञान वैज्ञानिक यह समझने का प्रयास कर रहे हैं कि रिश्तों को व्यक्त करने वाले शब्दों के पीछे जो तर्क है, क्या वह भाषा/शब्दों के अन्य दायरों पर भी लागू होता है?

नाते-रिश्ते न सिर्फ जीन्स के हस्तांतरण की दृष्टि से बल्कि संपत्ति व जायदाद, संस्कृति व सामाजिक रीति रिवाज़ों, और भाषा के हस्तांतरण की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। ज़ाहिर है, हम अपने नज़दीकी परिवार और जिनेटिक सम्बंधों को लेकर ही ज़्यादा चिंतित रहते हैं। चूंकि परिवार में हर व्यक्ति के अन्य सम्बंध भी होते हैं, इसलिए नाते-रिश्तों का दायरा काफी तेज़ी से फैलता है। हमारी चिंता यह रहती है कि हम इस व्यापक नेटवर्क में विभिन्न रिश्तों के लिए रिश्ता-सूचक शब्द कैसे गढ़ें और इस प्रक्रिया में कितनी दूर तक जाएं।

इस तरह के नामकरण समुदाय या संस्कृति आश्रित होते हैं। पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉर्ज मर्डोक ने काफी मेहनत करके 200 संस्कृति क्षेत्रों के 566 समुदायों के रिश्ता-नाम पैटर्न संकलित किए हैं। ये समुदाय दुनिया भर में फैले हैं। मर्डोक के कुछ निष्कर्ष हैरतअंगेज़ हैं।

जैसे, अमरीकी इंडियन्स उत्तरी पाइउटे भाषा का इस्तेमाल करते हैं और उनमें कोई लड़की और उसकी नानी एक-दूसरे को एक ही शब्द से संबोधित करती हैं। दूसरी ओर, भारत में इस रिश्ते को जेंडर सहित परिभाषित किया जाता है। संज्ञान वैज्ञानिक बताते हैं कि रिश्तों के लिए शब्द गढ़ते हुए हम सरलता और सूचना के बीच एक संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं। इंग्लैण्ड में, जहां बुज़ुर्गों का सम्मान करना अनिवार्य नहीं है, या पारिवारिक श्रेणियों को बहुत व्यापक तौर पर लागू नहीं किया जाता, वहां भाई और बहन शब्द पर्याप्त और सरल हैं। मगर तमिलों में रिश्ता-विशिष्ट शब्द अन्ना (बड़ा भाई), अक्का (बड़ी बहन), तांबी (छोटा भाई) तथा तनगी (छोटी बहन) महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं।

यही स्थिति प्रथम कज़िन्स (को-सिस्टर्स) व अन्य के

संदर्भ में भी है। ये शब्द सूचना तो देते ही हैं, परिवार की परंपरा व रीति रिवाज़ों, गठबंधनों, संपत्ति के बंटवारे वगैरह में हरेक सदस्य की भूमिका भी स्पष्ट करते हैं। लिहाज़ा, समुदाय में जीन साझेदारी के पैटर्न, पारिवारिक रीति-रिवाज़ों के आधार पर रिश्तों से जुड़े शब्दों का भंडार फैलता-सिकुड़ता है। अर्थात रिश्तों सम्बंधी शब्दों के भंडार के पीछे कुछ तर्क है, तर्क सामाजिक भी हो सकता है और जीव वैज्ञानिक भी।

क्या सरलता बनाम सूचना-बहुलता के बीच संतुलन की यह बात भाषा के अन्य क्षेत्रों पर भी लागू होती है? इसका जवाब 'हां' लगता है। इसका एक उदाहरण हमें रंग के एहसास और उसके विवरण में देखने को मिलता है।

VIBGYOR इंद्रधनुष के सात रंगों को व्यक्त करता है। मगर रंग इतने ही तो नहीं होते। जब हम मोरपंख के नीले रंग बनाम आकाश के नीले रंग की बात करते हैं या केनेरी पक्षी के पीले रंग और नींबू के पीले रंग की बात करते हैं, तो हमें सरलता को छोड़कर सूचना-बहुलता की ओर जाना होता है।

अलबत्ता, जैसा कि डॉ. केम्प व डॉ. रेजियर ने *साइन्स* पत्रिका के 25 मई के अंक में रिश्तों की श्रेणियों के विश्लेषण में स्पष्ट किया है, रिश्तों के नाम व्यक्तिवाचक होते हैं जबकि रंग सम्बंधी शब्द एक सतत अनुभूति के किसी एक हिस्से को दर्शाते हैं। मगर रोचक बात यह है कि इतने अलग-अलग तरह के भाषाई दायरों में वर्गीकरण के लिए विश्लेषण के एक-से सिद्धांत लागू किए जा सकते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***